माँ रेवा वैसी नहीं रहीं

– सुषमा यदुवंशी

भारत में वैसे तो अनेक पुण्य प्रदाता नदियाँ हैं और प्रत्येक नदियों का अपना स्थान विशेष महत्व है। गंगा का हरिद्वार, काशी, प्रयाग से लेकर गंगा सागर तक और छोटी से छोटी नदियों का अपने छोटे से आँचल क्षेत्र में अपना विशेष महत्व।

नर्मदा नदी केवल नदी मात्र ही नहीं अपितु आस्था व विश्वास का प्रतीक है, यह प्रदेशवासियों के लिए जीवनदायिनि नदी है। इसलिए इसके जल का निर्मल एवं अविरल बहते रहना अत्यंत आवश्यक है। इसका संरक्षण किया जाना आज हमारे लिए बहुत जरूरी हो गया है। वर्तमान में नदियों को बचाना और जल प्रदूषण से उन्हें मुक्त रखना हमारे लिए प्रमुख कार्य हो गया है।

सनातन पद्धति के अनुसार ये हमारी रगो में ये बसा हुआ था कि भगवान पर चढ़ाए हुए फूल–पत्र भी पवित्र होते हैं। पैर के नीचे दया अन्यत्र भी फेंकना पाप के भागी होना है। प्रचलन ये कि जो भी हो सब उठाकर नदियों में डाल दो जो कि वो भी पवित्र हो जाएगा। धीरे–धीरे कूड़ा करकट भी इस पवित्र नदी का भागीदार बन गया। दैनिक जीवन में बेतहाशा उपयोग में आने वाले अपघटनीय कचरा पैदा होना और माँ रेवा में समाहित कर देना। हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गया है।

उद्योग, घरों, गांवों एवं शहरों का कचरा, दूषित जीवन शैली धार्मिक गतिविधियां, लघु–व्यवसायिक खनन गतिविधियाँ, कृषि की आधुनिक गतिविधियों के कारण नर्मदा का जल दूषित हो कर प्राणरेखा का प्राण ही पल–पल हर रहा है।

श्रद्धा और आस्था से हजारों व्यक्ति हर साल नर्मदा नदी की कठिन यात्रा पर निकलते हैं। परिक्रमावासी घर परिवार से दूर सालों नर्मदा के किनारे गुजारते हैं। माँग कर खाते है। सदाव्रत से पोषित हो आगे बढ़ते हैं। जहाँ आश्रय मिलता है सो जाते हैं। एक मात्र नदी है जो कभी सूखती नहीं है।

नदियाँ सबसे पुरानी मानव सभ्यताओं का जन्म स्थल रही हैं। चट्टानी इलाकों को काटते हुए अपने मार्गों पर उपजाऊ बाढ़ के मैदान बनाए है। जीवन विविधताओं की अनुपम एवं भरपूर श्रृंखला पाई जाती है। लेकिन पिछले कुछ दशकों से ज्यादा पानी निकालना, वनों की कटाई, औद्योगिक सीवेज Point source खेती अपवाह से प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से नर्मदा भी तेजी से सिकुड़ रही है। बाहर मासों पानी देने वाली शिव तनया मौसमी बन गई है। चौकाने वाली बात में है कि नर्मदा 60 प्रतिशत कम हो गई है। 2030 के आसपास तक हमारे सामने भयावह स्थिति का निर्माण हो जाएगा।

गुजर बसर के लिए 50 प्रतिशत पानी ही उपलब्ध होगा। भारत में आज की पीढ़ी के लिए पानी की कमी और सूखा एक वास्तविकता बन गई है। अगर पानी की आपूर्ति बढ़ाने और जल संसाधनों का शोषण कम करने की उपयोगिता को नहीं समझा तो हमारी आने वाली पीढ़ी को गंभीर जल संकट के साथ खाद्य संकट का भी सामना करना पड़ेगा।

वर्तमान में नर्मदा में 18 शहरों का 22 करोड़ लीटर सीवेज मिलता है। अकेले औद्यौगिक क्षेत्रों में 25 लाख लीटर गंदा पानी नदी में मिलकर मलिन कर देता है। जो भविष्य में इस बहुरूपिणी प्रशान्ता, चपल मुखरा का अस्तित्व ही छीन लेगा।

अमरकंटक से इतराती, बलखाती, लुकती–छिपती, चट्टानों को तराशती जैसे–जैसे आगे बढ़ती है, इसके दोहन की भी कहानी आगे बढ़ती जाती है। आबादी का बोझ पिछली एक शताब्दी में काफी बढ़ गया है। सन् 1901 में 78 लाख के आसपास आबादी थी जबकि 2011 की जनगणना के अनुसार साढे तीन करोड़ के उपर पहुंच गई है। अब 2018 चल रहा है जो कि खतरे की घंटी पर है। संकटों से घिरने के बावजूद अपनी अविरलता, जीवंतता को छोड़ने को तैयार नहीं है, और संघर्षों से जूझ रही है। इसकी सहायक नदियों पर भी दोहन और प्रदूषण का बोझ भी बढ़ ही रहा है।

आश्चर्यचकित बात यह है कि जिस आबादी का मलमूत्र जो नर्मदा अपने आँचल में ढो रही है, उन सभी को पेयजल प्रदान कर सींच भी रही है। राजस्थान में सौराष्ट्र और मध्यप्रदेश के 35 शहरों और उद्योगों की प्यास बुझाने का जिम्मा नर्मदा पर है। हर कोई नर्मदा की एक एक बूंद का दोहन करने पर तुला है।

औद्योगिक क्षेत्र चाहे वो मध्यप्रदेश का हो या गुजरात का सभी निचोड़ने में लगे हैं।

''नर्मदा पुत्र'' श्री अमृतलाल जी वेगड का कहना है– ''मेरी नर्मदा अब वैसी नहीं रहीं'' पहली परिक्रमा 1977 के दौरान नर्मदा जैसी थी वैसी नहीं रही। वह झीलों को जोड़ने वाली कड़ी बनकर रह गई झील में प्रवाह नहीं होती वह तो ठहरा हुआ पानी है, और नदी का मूल तत्व है प्रवाह गति।

पिछले दो दशकों से नर्मदा को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए कानूनी लडाई लड रहे जबलपुर निवासी पी.जी. नाजपांडे बताते है कि शहर के आसपास डेयरियों का गोबर परियट और हिरन जैसी सहायक नदियों से होते हुए नर्मदा में पहुँचता है। इसी की वजह से नर्मदा में खरपतवार फैलती है। हालत यह है कि सर्दियों में नर्मदा का पूरा पानी हरा दिखाई देता है। इसी पानी में ''आजोला'' नामक जलीय खरपतवार है जो कि टेरीडो फाइटा ग्रुप का एक जलीय खरपतवार है। इसकी मौजूदगी जल के दूषित होने का संकेत है। यह पानी में ऑक्सीजन की मात्रा को कम कर देती है, जो जलीय जैव विविधता के लिए नुकसानदेह है।

नर्मदा को प्रदूषण से बचाने को लेकर बढती चिंताओं के बीच च्ब्ठ ;च्वससनसपं ब्ंदजतवस ठवंतकद्ध में एक रिर्पोट जारी कर बताया कि विभिन्न नियत्रंक स्टेशनों पर नर्मदा जल की गुणवत्ता ठीक है लेकिन पर्यावरण संरक्षक से जुडे लोग इसे नकारते हैं कि ये जल किनारों के बजाय धारा के बीच से लिए गए है। जो भी हो निर्मलता को बचाए रखना एक बढ़ी चुनौती है।

सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, गंदे नालों को डायवर्ट करने, फिलट्रेशन प्लांट सीवर लाईन को अलग करने साथ ही साथ नगर पालिकाओं और फैक्ट्रीयों के खिलाफ कार्यवाही जेसे उपाय भी शामिल किए गए हैं। परन्तु जब तक व्यापक जागरूकता अभियान और अधिनियम 1974 (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) के अंतर्गत कार्यवाही बड़े पैमाने पर की जानी चाहिए।

पर्यावरण या नदी संरक्षण जैसे कार्य सामुदायिक जागरूकता और सहभगिता के बिना संभव नहीं है। जनसहयोग और लोगों के मन में जिम्मेदारी का भाव उनकी व्यवहारिकता और मानसिकता में बदलाव लाना जरूरी है।

नर्मदा की छोटी बडी कुल 41 सहायक नदियाँ हैं जिनमें 19 नदियाँ ऐसी हैं जिनकी लंबाई 54 कि.मी. से अधिक है। ये सतपुडा, विन्ध्य और मैकल पर्वतों से बूंद–बूंद पानी लाकर सदानीरा बनाती है। पर अब प्रवाह कम होता जा रहा है। ''बांध'' जिसका मूल कारण हैं। इन सहायक नदियों पर बांध बन जाने के कारण बांधों में जल का संचय हो जाने से पहले तुलना में अब नर्मदा तक कम जल पहुँचता है। इसलिए नर्मदा की अविरलता को बनाए रखने के लिए वनों के प्रसार के साथ–साथ वर्षा का जल अधिक से अधिक नर्मदा में पहुँचे ये प्रयास करना चाहिए।

नर्मदा के सामने एक के बाद एक चुनौतियाँ आकर खड़ी हो जाती है। कभी खनन माफिया तो कभी बांधों के जाल में फंस चुकी नर्मदा की गोद में थर्मल और नाभिकीय सयंत्री नर्मदा की मुख्य धारा पर 5 बडे बाँधों का निर्माण हो चुका है। 5 बड़े प्रस्तावित है जो कि पारिस्थितिक तंत्र के लिए घातक है साथ ही सामाजिक सांस्कृतियॉ भै डूब गई और सांस्कृतिक धरोहरें गवां बैठी फिर भी विकास के मॉडल का त्याग नहीं किया जा रहा।

भारतीय पारम्परिक समाज जिसमें आदिवासी और ग्रामीण दोनों इलाके शामिल हैं जिनका संबंध नर्मदा से अनूठा है। कहते हैं नर्मदा के अधिष्ठता मार्केण्डय ऋषि ने नर्मदा के साथ–साथ इसकी सहायक नदियों की परिक्रमा 3 वर्ष 3 माह व 13 दिन में पूरी की थी वर्तमान में हो रही परिक्रमा में कुल 2560 कि.मी. का सफर तय किया जाता है। अब नदी और तालाब में अंतर नहीं रहा क्योंकि अब प्रवाह नहीं बचा। जिसके कारण तरबूज–खरबूज, ककडी आदि की खेती करने वाले किसान भी बेरोजगार हो गए हैं। 1977 में नर्मदा की पदयात्रा करने वाले अमृतलाल जी वेगड़ ने 2002 में पुनः यात्रा अपनी सहधर्मिणी के साथ शुरू की। पहली यात्रा में पौने तीन हजार कि.मी. यात्रा की थी और दूसरी में करीब सवा एक हजार कि.मी. यात्रा पूरी की। दोनों यात्राओं में 25 सालों का अंतराल रहा उनका कहना है कि पानी आज भी उतना ही है जितना डायनासोर के जमाने में था बस खपत बहुत ज्यादा बढ गई है। मनुष्य कल–कारखाने, उद्योग धंधे सभी को पानी चाहिए। दुनिया के सारे देश खुशहाल है जिन्होंने अपनी जनसंख्या पर नियंत्रण रखा है। पानी बरसता नहीं, वन काटे जा रहे हो तो पानी को लेकर तो युद्ध होना ही है। नर्मदा बचाने के लिए मुख्यमंत्री जी ने ''त्वदीय पाद पंकजंम'' नर्मदा यात्रा शुरू की है। देखें नर्मदा को कितना जीवनदान मिल पाता है इन प्रयासों से।

अगर नर्मदा के संरक्षण को भावनात्मक रूप प्रदान करने वालों की सूची में पर्यावरणविद् अनिल जी दवे का नाम न लिया जाए तो विषय अछूता रहेगा। वर्तमान परिदृश्य को समझते हुए और माँ रेवा का महत्व नवीन पीढ़ी को समझाते हुए उन्होंने माँ नर्मदा की यात्रा एक छोटे से हेलीकॉप्टर में बैठकर 18 घंटे यात्रा की और पूरे दृश्य का वीडियों भी बनाया। जिससे उन्होंने ये भी बताया कि कहॉ वनों की कटाई से नर्मदा के आसपास क्षेत्रों और ग्रामीण जनजीवन पर कितना प्रभाव पडा। नर्मदा नदी के संरक्षण के लिए, लोगों में जागरूकता के लिए उन्होंने ''नर्मदा समग्र'' संस्था बनाकर काम किया। साथ ही एशिया में खास स्थान रखने वाले ''नदी उत्सव'' के पीछे भी अनिल जी दवे ही की कोशिश थी। जिसके अंतर्गत उन्होंने नदियों के रख–रखाव और संरक्षण पर चर्चा की थी, और इसी विषय पर अनेकों किताबों की भी रचना की। ऐसे नर्मदा पुत्रों और नर्मदा को बचाने में लगे सभी नर्मदा पुत्र एवं पुत्रियों को मेरा नमन।

साहित्य परिषद, महामंत्री,
महाकौशल प्रांत